ड्यूई

किताबघर में है एक बिल्ला



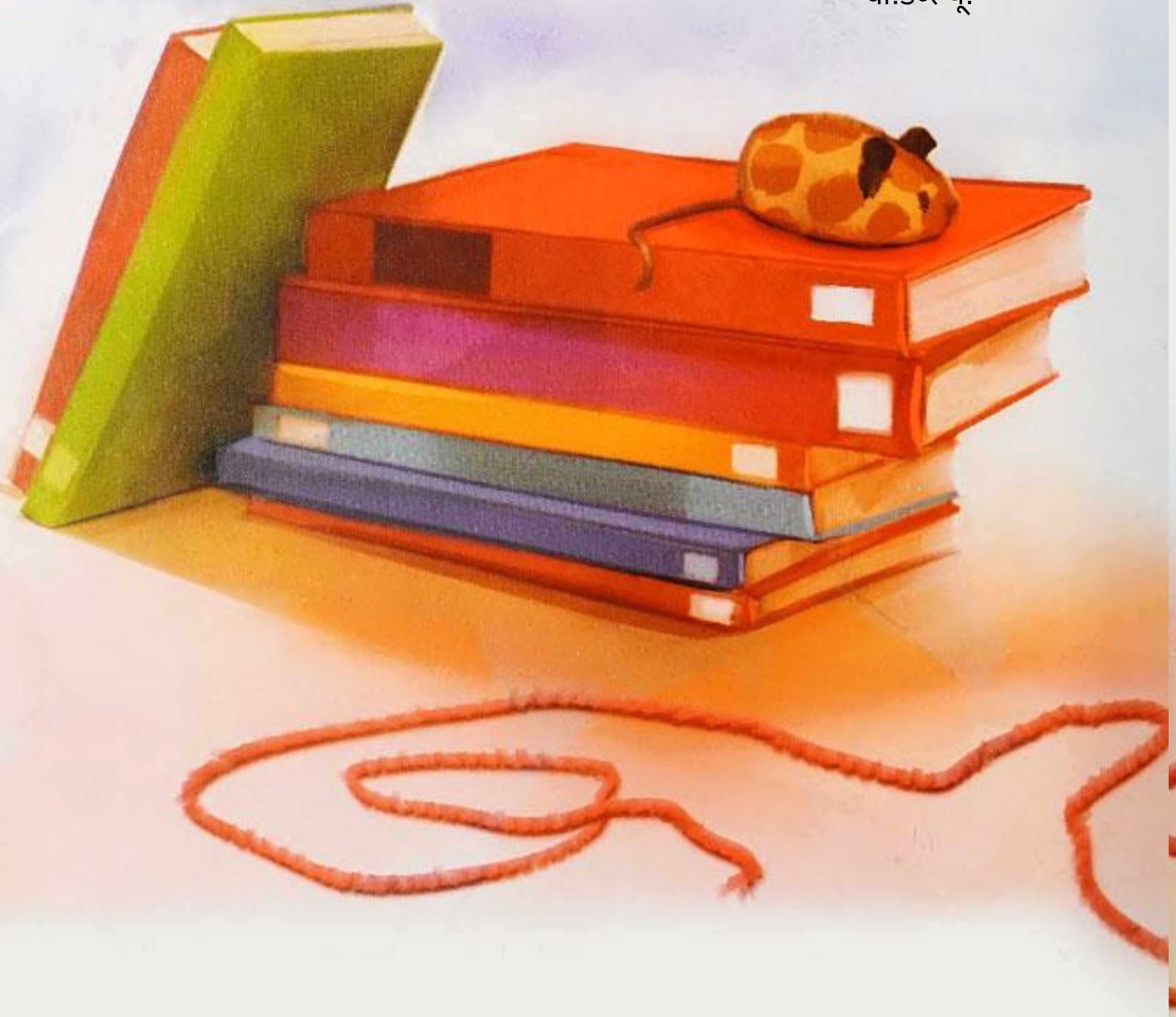
लेखन: विकी मायरन
तथा ब्रैट विटर
चित्र: स्टीव जेम्स
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हाना, नेथन व रायन के लिए

- वी.एम.

लिडिया व आइसैक के लिए

- बी.डब्ल्यू.



ड्यूई

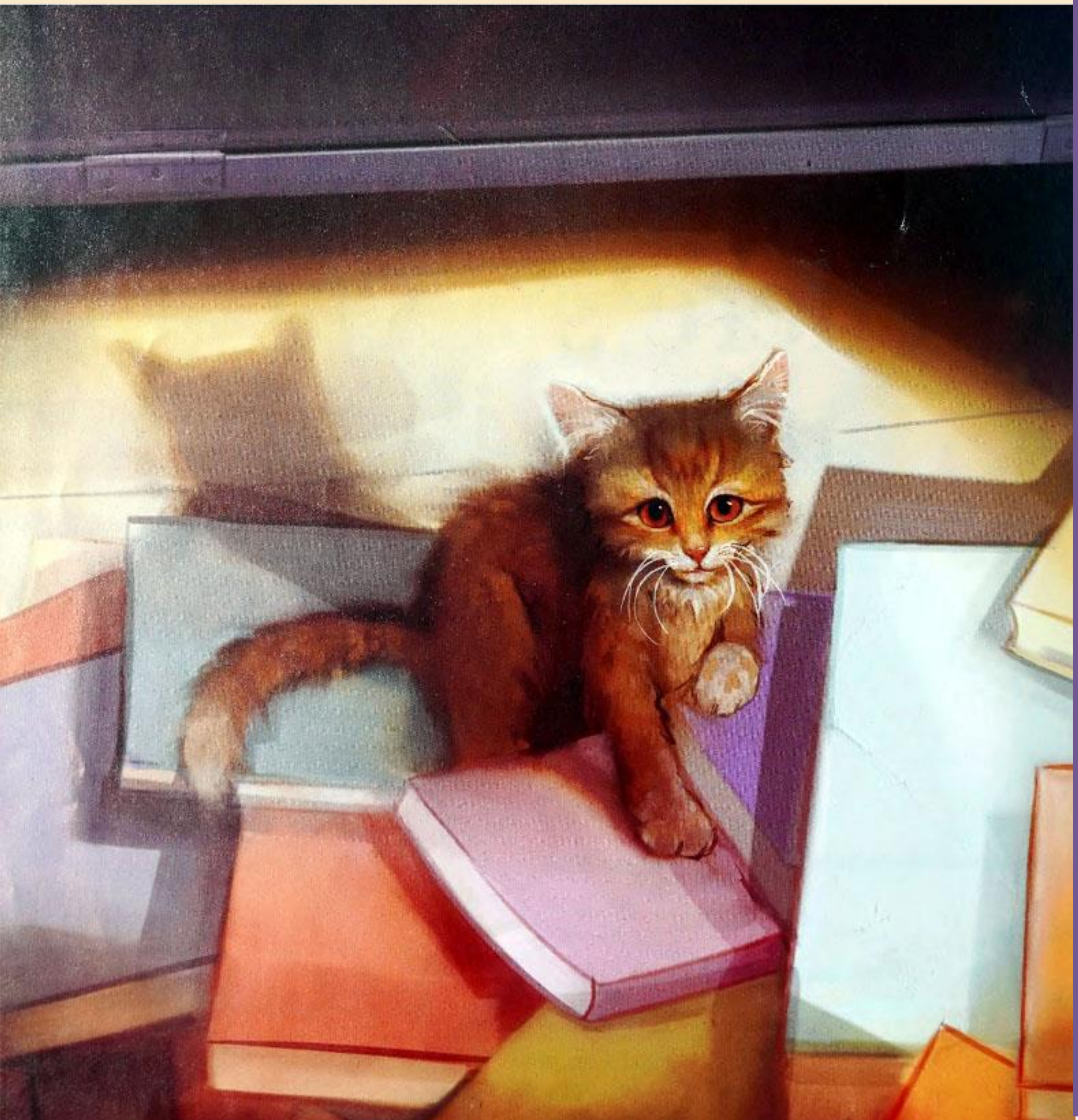
किताबघर में है एक बिल्ला

लेखन: विकी मायरन तथा ब्रैट विटर

चित्र: स्टीव जेम्स

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





आयोवा के एक छोटे से कस्बे स्पैन्सर के लोग, हर रात किताबघर के लौटाने वाले बक्से में किताबें छोड़ जाते थे। मज़ाकिया किताबें, ट्रकों वाली किताबें, सूअरों वाली किताबें - वे उन सबको लौटाते थे।

पर एक रात,

जो साल की सबसे ठण्डी रात थी,

किसीने एक अजीबो-गरीब, चौंका देने वाली चीज़ बक्से में छोड़ी . . .

एक नन्हा-सा बिलौटा।



विकी, किताबघर की लाइब्रेरियन को, वह अगली सुबह मिला। वह ठण्ड से कुड़क रहा था, डरा-सहमा था, और बेहद-बेहद गन्दा था। विकी ने उसे एक नज़र देखा और तय किया कि उसे गरम पानी से नहला देना चाहिए। बिल्ला जब तसले में गया वह भूरा दिख रहा था और रो रहा था। पर जब नहा कर निकला उसका रंग नारंगी निखर आया था, और वह खुशी से घुरघुरा रहा था।

“मैं तुम्हें रखूंगी,” विकी ने कहा, वह उससे प्यार जो करने लगी थी। “हम तुम्हारा नाम ड्यूई औरपढ़ो किताबें रखेंगे। तुम यहीं रह सकते हो और किताबघर के बिल्ले बन सकते हो।”

पर ड्यूई को मालूम ही नहीं था कि किताबघर का बिल्ला बनने का मतलब होता क्या है। सो उसने वह सब किया जो बिलौटे अमूमन करते हैं - वह खेलने लगा।



वह अखबारों पर लपकता . . .

किताबों के ठेले की सवारी करता . . .





और कलमों को फर्श पर गिरा देता।



वह मार्टी चूहे के साथ मस्ती करता . . .

हर खुली दराज की तलाशी लेता . . .





और हमेशा ही कम से कम एक
रबर बैण्ड तो ढूंढ़ ही लेता।

पर ड्यूई को जो सबसे ज़्यादा भाता था वह थे इन्सान। लम्बे इन्सान, गोल-मटोल इन्सान। चुप्पे इन्सान। ज़ोर से बोलने वाले इन्सान। पर छोटे बच्चे उसे हमशा अचरज से भर देते। और यह अचरज हमेशा सुखद नहीं होता।

"नेथन देखो तो," नेथन की माँ ने कहा।

"किताबघर में एक बिल्ला है।"

नेथन नीचे झुका और बोला, "हाय, हूई ड्यूई यूक्स।"

"नहीं," उसकी बहन हाना तुरत बोल पड़ी, "उसका नाम ड्यूई औरपढ़ो किताबें है!"

ड्यूई छटपटाया, क्योंकि नेथन उसकी पीठ को गलत दिशा में सहला रहा था।

कोई उसे लाड़ लड़ाए यह तो ड्यूई को पसन्द था, पर उल्टी दिशा में हाथ फिराना उसे सख़्त नापसन्द था।



ड्यूई अपने रोएं चाट कर सही दिशा में कर ही रहा था कि अचानक उसने एक अजीब-सी आवाज़ सुनी।

"वाआआआआआ!"

ड्यूई के कान चौकन्ने खड़े हो गए। उसने इधर-उधर ताक कर देखा।

"वाआआआआआ!"





"वाआआआआआ!"

ड्यूई कूद कर सावधान हो तन गया

और बि-ल-कु-ल धीमी चाल से आगे बढ़ा

और तब आवाज़ की ओर मुड़ा।

आश्चर्य!

ड्यूई ने पाया कि छोटे इन्सान

एकदम नन्हे आकार में भी आते हैं!

और उन्हें किलकिलाना अच्छा लगता है।

और झपटना।

और खींचना।

और कूजना।

शिशु तो अद्भुत होते हैं,

ड्यूई ने सोचा।

प्यारे और खुशबूदार भी।





कुछ दिनों बाद ड्यूई को अपनी छानबीन के दौरान एक खुफिया कमरा मिला। यह अब तक की उसकी सबसे उत्तेजक खोज थी। यह था बच्चों को पढ़ कर कविता-कहानी सुनाने की जगह!

क्या खूब, यह तो मज़ेदार है अपनी नाक से धकिया कर कमरे में घुसते हुए ड्यूई ने सोचा।

इतने में कोई चीख पड़ाः

किताबघर में एक बिल्ला है!

ड्यूई चौंक कर जड़ हो गया।





एक मिनट के लिए शांति रही!



तब हंगामा मच गया!





जब तक ड्यूई कुछ समझता,

उसे किसीने उलटा उठा लिया था।

अरे तेरी की ड्यूई ने सोचा, *अब भला क्या करूँ?*





उस देर रात ड्यूई ने अपने दोस्त मार्टी चूहे से बात की। *किताबघर अनूठी जगह है,* ड्यूई ने *कहा, पर मैं खींचे-ताने जाने से, भोंके जाने से, ओर उलटा उठाए जाने से उकता चुका हूँ। मैं सिर्फ किताबघर में एक बिल्ला नहीं हूँ, मैं किताबघरी बिल्ला हूँ। किताबघर का बिल्ला लोगों की मदद करता है। मैं ऐसा सोचता हूँ और बानवे फीसदी मानता भी हूँ कि मैं यहाँ इसीलिए ही हूँ।*

मार्टी चूहा चुप ही रहा, कुछ न बोला।

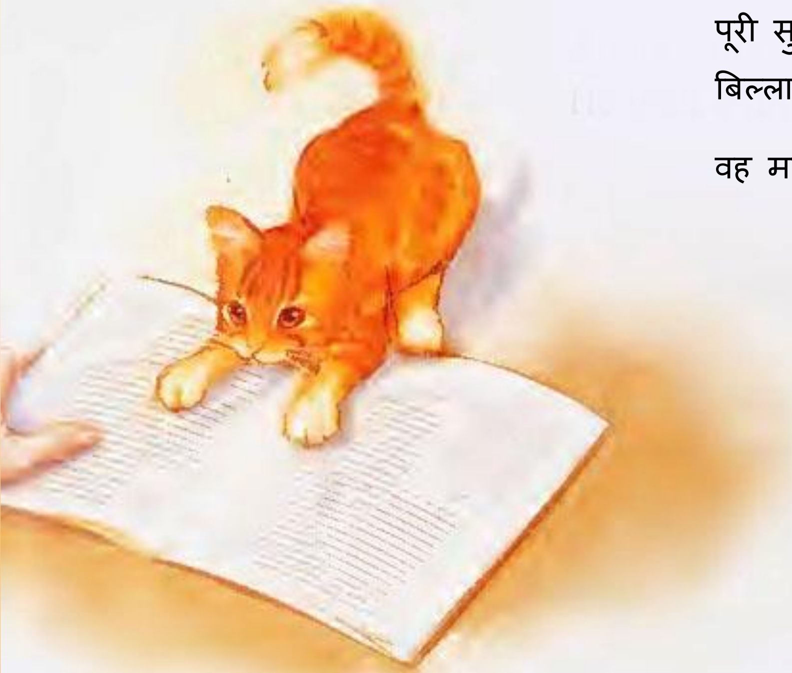
मैं ऐसा करके दिखाऊँगा, ड्यूई ने कहा। *मैं लोगों की मदद करूँगा।* और यह सोच वह इतना खुश हो गया कि उसने मार्टी चूहे को हवा में उछाला, अपनी पिछली टांगों से उसे लतियाया, और तब उसे तकिया बना उस पर सो गया।

अगली सुबह जब पहले लोग किताबघर पहुँचे ड्यूई उनके स्वागत में दरवाज़े के पास तैनात था।



पूरी सुबह ड्यूई ने किताबघर का असली
बिल्ला होने का सा काम किया।

वह मम्मियों और नानियों के साथ पढ़ा . . .



पापाओं की काम में मदद की . .





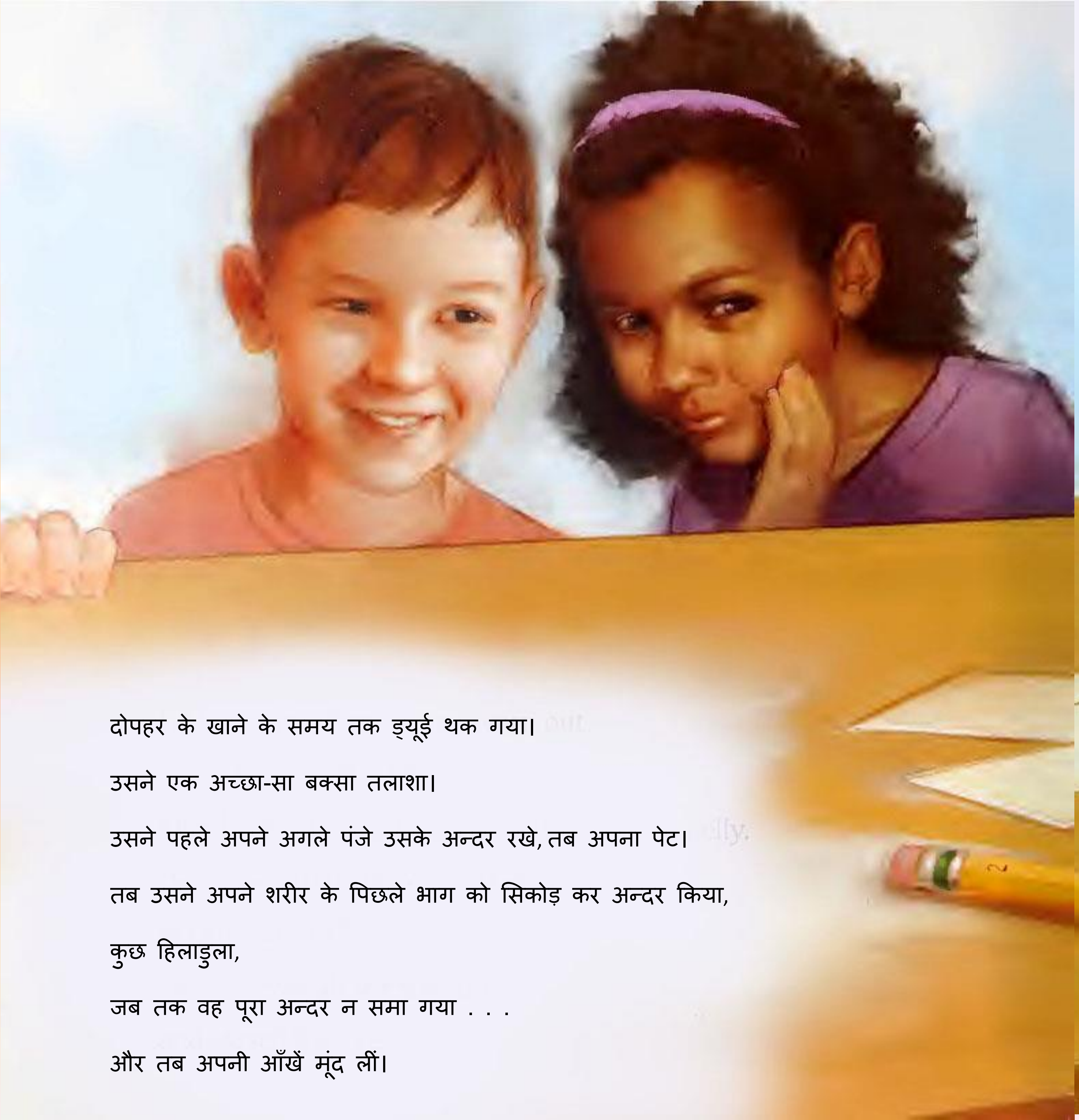
किताबघर की सहायिका के
साथ आलों में किताबें जमाईं।



जब उसे नन्हा नेथन दिखा, वह डेढ़ चक्कर काट खड़ा हुआ ताकि वह उसके सिर से पूंछ की ओर उसे सहला सके - जो बिल्लियों को सहलाने का सही तरीका है।

“मुझे खुशी है कि हम दोस्त हैं, ड्यूइइली,” नेथन बोला।

ड्यूई मुस्कुराया।



दोपहर के खाने के समय तक ड्यूई थक गया।

उसने एक अच्छा-सा बक्सा तलाशा।

उसने पहले अपने अगले पंजे उसके अन्दर रखे, तब अपना पेट।

तब उसने अपने शरीर के पिछले भाग को सिकोड़ कर अन्दर किया,

कुछ हिलाडुला,

जब तक वह पूरा अन्दर न समा गया . . .

और तब अपनी आँखें मूंद लीं।

''किताबघर में एक नारंगी मफिन (मीठी रोटी) है,''
एक लड़की ने ठिठिया कर कहा।



ड्यूई मीठे बिलौटे सपनों में खोने ही वाला था कि उसे किसीकी गहरी उसांस सुनाई दी। उसकी आँखें फटाक से खुल गईं और उसे किताबघर के दूसरी ओर एक लड़की दिखी।



वह उदास छोटी लड़की अकेले बैठी चुपचाप पढ़ रही थी।



वह उसके पास चढ़ आया और उसे घूरने लगा।

लड़की ने आखें दूसरी ओर फेर लीं।



उसने लड़की का हाथ सूंघा।

पर वह बोलने को तैयार नहीं थी।





सो ड्यूई ने उसके दस्ताने मेज़ से,

फर्श पर गिरा दिए।

लड़की ने उन्हें वहीं पड़े रहने दिया।



तब ड्यूई को लड़की का जैकेट दिखा . . .
और उसे अब तक का सबसे उम्दा खयाल सूझा . . .

ऊल-जलूल हरकतें करना हमेशा असरकार होता है!

मैं आज बेवकूफ बिल्ला बनूंगा!



लड़की ने ड्यूई को घूरा।

''तुम बैंगनी डबल रोटी वाले रोएंदार हॉटडॉग जैसे लगते हो,'' लड़की ने कहा और तब ड्यूई को चौंका दिया।





वह ज़ोर-से हंस पड़ी।

“तुम कितने प्यारे हो ड्यूई औरपढ़ो किताबें,” वह फुसफुसाई। ड्यूई उसकी गोद में दुबका और खुशी से घुरघुराने लगा।

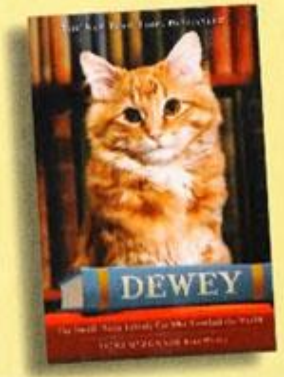
यही तो बात है, ड्यूई ने सोचा,

मैं एक असली किताबघरी बिल्ला हूँ, और यह मुझे बेहद अच्छा लग रहा है।

ना, बेहद अच्छे से भी बेहतर लगा रहा है,

घुर्रर . . . उम्दा लग रहा है!





विकी मायरन की वयस्कों के लिए लिखी किताब से प्रेरित

यह पुस्तक केवल बिल्लियों के सम्मान में नहीं लिखी गई है . . .
यह किताबघरों के लिए एक प्रेम पत्र है। - पब्लिशर्स वीकली

मायरन की आकर्षक, मार्मिक व कोमल कथा, कठिन परिस्थितियों से बच निकलने, निष्ठा और प्रेम की अविस्मरणीय कहानी है। यह पशुओं और किताबघरों के उन रहस्यमय व आश्चर्यजनक तौर-तरीकों को पेश करती है जो मानवता को समृद्ध करते हैं।